

## मनःपर्यव ज्ञान भी सम्भव है ?

- मुनि गुलाबचन्द्र 'निर्मोही'

डॉ: मैक्सी मिलियन लैंगस्नर वियना के एक सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानशास्त्री हो चुके हैं। उन्होंने मस्तिष्क तरंगों के आधार पर अपराधी के मन को पढ़ने का सफल प्रयत्न किया था। एक बार कनाडा के फार्म हाउस में एक साथ हुई चार हत्याओं के अपराधी का पता मस्तिष्क तरंगों के आधार पर ही उन्होंने लगाया था। उन्होंने इस सम्बन्ध में बतलाया कि मनुष्य के विचार अपने कार्य-कलाप और तीव्रता में रेडियो तरंगों की भांति होते हैं। तीव्रता न होने पर वे शीघ्र ही लुप्त हो जाते हैं। मनुष्य में ऐसी मनोवेगों को ग्रहण करने की अन्तर्निहित शक्ति होती है। इसी शक्ति से उच्च वर्ग के प्राणी एक दूसरे से अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। परन्तु मानव में अभिव्यक्ति के लिए वाकशक्ति भी है अतः वह अभिव्यक्ति की अन्तर्निहित शक्ति पुनः अर्जित की जा सकती है। इस शक्ति से किसी भी व्यक्ति का विचार पठन किया जा सकता है और यह विचार पठन बहुत उपयोगी है, विशेष तौर से अपराध के क्षेत्र में, क्योंकि कोई भी अपराधी अपने कुकृत्यों से कभी विचार मुक्त नहीं हो पाता है। विचार तरंगों उसके अवचेतन मन में सदा उत्पन्न होती रहती हैं और उन्हें मनोवैज्ञानिक ग्रहण कर सकते हैं।

उन्होंने इस बात को भी स्पष्ट किया कि वातावरण में विचार तरंगों काफी समय तक बनी रहती हैं और उन्हें पकड़ा जा सकता है।

उन्होंने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि अपराधी के दिमाग में अपने किए हुए अपराध के चित्र बनते और बिगड़ते हैं। कोई भी मनोविज्ञान को समझने वाला उन चित्रों को आसानी से ग्रहण कर सकता है।

एक अन्य रूसी वैज्ञानिक किरिलियान ने हाई फ्रिक्वेंसी की फोटोग्राफी का विकास किया है। यदि ऐसी फोटोग्राफी से किसी के हाथ का चित्र लिया जाए तो केवल हाथ

का ही चित्र नहीं आता, अपितु उससे जो किरणें निकल रही हैं उनका भी चित्र आ जाता है। इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि यदि व्यक्ति निषेधात्मक विचारों से भरा है तो उसके हाथ के पास जो विद्युत परमाणु है उसका चित्र अस्वस्थ, रुग्ण और अराजक होता है। वह ऐसी लगता है मानो किसी बच्चे या पागल आदमी द्वारा खींची गई कोई टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें हों। यदि व्यक्ति शुभ या पवित्र भावनाओं से भरा है तो उसके हाथ के आस-पास जो विद्युत परमाणु है उनका चित्र लयबद्ध, सुन्दर और सानुपातिक होता है। किरलियान ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया कि बहुत शीघ्र ही वह समय आने वाला है जब किसी के बीमार होने से पहले ही हम यह बताने में समर्थ हो जायेंगे कि वह बीमार होने वाला है। शरीर पर बीमारी उतरने से पहले उसके विद्युत वर्तुल पर बीमारी उतर आती है। इससे पहले कि व्यक्ति की मृत्यु हो उसका विद्युत वर्तुल सिकुड़ना शुरू हो जाता है। यहां तक कि कोई आदमी किसी की हत्या करे, उसके पहले ही उस विद्युत वर्तुल में हत्या के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं।

प्रत्येक मनुष्य के इर्दगिर्द एक आभामण्डल होता है। मनुष्य अकेला ही नहीं चलता। उसके इर्दगिर्द एक विद्युत वर्तुल (इलेक्ट्रो डायनेमिक फील्ड) भी चलता है। रूसी वैज्ञानिकों का कहना है कि जीव और अजीव में एक ही फर्क किया जा सकता है कि जिसके आस-पास आभामण्डल है वह जीवित है और जिसके पास आभामंडल नहीं है वह मृत है। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि मृत्यु के बाद आभामंडल को विसर्जित होने में तीन दिन लगते हैं। जब तक आभामंडल सुरक्षित है तब तक व्यक्ति सूक्ष्म तल पर जीवित होता है।

महावीर या अन्य आप्त पुरुषों के प्रतीक के साथ आभामंडल निर्मित किया जाता है। यह सिर्फ कल्पना नहीं है, एक वास्तविकता है। वास्तव में ही उनके आस-पास एक आभामंडल होता है। अब तक तो इस आभामंडल को वे ही जान सकते थे जिन्हें गहरी और सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त थी किन्तु सन १९३० में एक अंग्रेज वैज्ञानिक ने एक ऐसी रासायनिक प्रक्रिया निर्मित कर दी जिससे प्रत्येक व्यक्ति उस यंत्र के माध्यम से दूसरे के आभामंडल को देख सकता है।

जिस प्रकार व्यक्ति के अंगूठे की छाप अपनी निजी होती है उसी प्रकार आभामंडल भी अपना निजी होता है। आभामंडल उन सारी बातों को बता देता है जो

व्यक्ति के गहरे अवचेतन मन में निर्मित होकर भविष्य में घटित होने वाली होती है तथा व्यक्ति स्वयं उन्हें नहीं जान पाता।

आगमों में ज्ञान के पांच प्रकार बताए गए हैं उनमें चौथा है - मनः पर्याय ज्ञान। मनोवर्गणा अथवा मन से सम्बन्धित परमाणुओं के द्वारा जो मन की अवस्थाओं का ज्ञान होता है, उसे मनःपर्याय ज्ञान कहते हैं। मानसिक वर्गणाओं की पर्याय अवधिज्ञान का विषय भी बनती है फिर भी मनःपर्याय ज्ञान मानसिक पर्यायों का विशेषज्ञ होता है। एक डॉक्टर समूचे शरीर की चिकित्सा-विधि को जानता है और एक वह है जो किसी एक अवयव विशेष का विशेषज्ञ होता है। यही स्थिति अवधि और मनःपर्याय की होती है। मनःपर्याय ज्ञानी अमूर्त पदार्थ का साक्षात् नहीं कर सकता। वह द्रव्य मन के साक्षात्कार के द्वारा चिंतनीय पदार्थों को जानता है। मनःपर्याय ज्ञान दूसरों की मानसिक आकृतियों को जानता है। मनस्क प्राणी जो चिंतन करते हैं उस चिंतन के अनुरूप आकृतियां बनती हैं। मनःपर्याय ज्ञान मानसिक आकृतियों बनती हैं। मनःपर्याय ज्ञान मानसिक आकृतियों का साक्षात्कार करता है।

मनःपर्याय ज्ञान आवृत्त चेतना का ही एक विभाग है। अतः वह आत्मा की अमूर्त मानसिक परिणति का साक्षात् नहीं कर सकता किन्तु इसके निमित्त से होने वाली मूर्त मानसिक परिणति का साक्षात्कार कर लेता है। उसका विषय मानसिक आकृतियों को साक्षात् जानना है और इसके लिए वह अपने आप में पूर्ण स्वतंत्र है। उसे किसी दूसरे पर निर्भर होने की अपेक्षा नहीं होती।

विज्ञान की भाषा में आभामंडल के अस्तित्व को स्वीकार किया गया। आभामंडल व्यक्ति की चेतना के साथ-साथ रहने वाला पुद्गलों और परमाणुओं का संस्थान है। चेतना व्यक्ति के तैजस शरीर (विद्युत शरीर) को सक्रिय बनाती है। जब तैजस शरीर सक्रिय होता है तब वह किरणों का विकिरण करता है। यह विकिरण ही व्यक्ति के शरीर पर वर्तुलाकार घेरा बना लेता है। यह घेरा ही आभामंडल है। आभामंडल व्यक्ति के भावमंडल (चेतना) के अनुरूप ही होता है। भावमंडल जितना शुद्ध होगा, आभामंडल भी उतना ही शुद्ध होगा। भाव मंडल मलिन होगा तो आभामंडल भी मलिन होगा। व्यक्ति अपनी भावधारा के अनुसार आभामंडल को बदल सकता है।

मनःपर्याय ज्ञानी मानस परमाणुओं से मन के परिणामों को साक्षात् जान लेता है। मनोवैज्ञानिक भी आभामंडल के सहारे मन की स्थिति को पहचान लेता है। दोनों की प्रक्रियाओं में बहुत बड़ी समानता है। यह समानता इस बात की सूचक है कि जिस मनःपर्याय ज्ञान को समय के प्रभाव से विच्छिन्न मान लिया गया है, क्या आज का विज्ञान उसके निकट नहीं पहुंच रहा है। आधुनिक विज्ञान ने धर्म, दर्शन और अध्यात्म के अनेक रहस्यपूर्ण तथ्यों का उदघाटन किया है। आभामंडल के सहारे मन की स्थिति को पहचान लेने का उपक्रम उसी रहस्य की खोज में एक नई कड़ी है तथा अध्यात्मविदों के लिए चिंतन और विकास के नये आयामों का उदघाटन करने की पर्याप्त संभावना उसमें निहित है।